रोहिड़ा का प्राकृतिक महत्व उच्च गुणवत्ता की लकड़ी के कारण है जिसमें विभिन्न रासायनिक और भौतिक गुण पाए जाते हैं। इसके साथ ही उपजीवी गुण होने का कारण रोहिड़ा का वृक्ष का स्वरूप औषधीय गुणावलोकी के साथ अनेक पालिकाओं का कारण बना है। इसी के कारण रोहिड़ा की लकड़ी का उपयोग व्यापक होता है।

रोहिड़ा बिनोनीसिया (Bignoniaceae) परिवार का एक बहुवर्षीय वृक्ष है। यह वृक्ष भारत के महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब और हरियाणा में पाया जाता है। रोहिड़ा के बहुत से प्रकार होते हैं। इनमें ियाल्फाउलेरा का साथ एवं शारीरिक रितियों में एक विशिष्ट विवरण है। इसी की वजह से इसे चेताता, पल्लोस, बीकानेर, नागपुर, या बांधु और अन्य जीव जिन्हें वे वातावरण के शुष्क क्षेत्रों में बाली जाता है।

रोहिड़ा घरेलू का अंतर्गत महत्वपूर्ण वृक्ष है, जिसे भारतवाड़ा के शासन (Marwar teak) भी कह जाता है। क्योंकि इसकी लकड़ी सागर के समय गुणवत्ता बाली तथा मजबूत होती है। इसी के कारण इस वृक्ष का वृक्ष वातावरण में अपनी है। रोहिड़ा एक वर्ष आकार वृक्ष है जिसका छाया खुला और फूला होता है और इसकी छाया जीवन में गहराई तक जाती है। यह 30° से 48° सेंटीग्रेड तक के तापमान और अधिकतम 150 से 400 मिनट में बाली जाता है। तथा इस वृक्ष की वृक्ष दोमड़ तथा रीती टोपड़ मूदा व पी.एच. 6.5 से 8.0 में बाली होती है। इस अंचल प्रकाश की आकार वृक्षारोपण होती है तथा यह अलग, अलग अन्य तथा हवाओं में भी दूसरी रूप से खप्त रहता है। रोहिड़ा में उष्णकटिबंधीय वर्ष के अपरिसमान मण्डल व अनुवनकापल वृक्ष (asynchronous flowering) देखा जाता है। आकारबाली ग्रीन ग्रीन, ग्रीन व नारागी रंग के सुंदर फूल होने के कारण इस वृक्ष में राजस्थान में राजस्थान के राजस्थान का ज्यादा प्रचलित है। इसमें फलीनुका फल होते हैं जो मादों से जून माह तक फूलते हैं।
परियोजनाभूमि राजस्थान के छह जिलों से 41 सी.पी.टी. चयनित किए गए।

पार्श्व से मगई माह के दौरान इन चयनित वृक्षों से ताजा फलियाँ एकठल की गई तथा प्रत्येक वृक्ष के फलादायिकी दिशानिर्देश (Phenological observations) जैसे फूलों के रंग, फलों व बीज के आकार का डेटा संग्रहित किया गया। सभी फलियाँ और बीज अभिलक्षणों में काफी विभिन्नता देखी गई जैसे 100 बीजों का भार (0.6-1.3 ग्रा.), बीज लम्बाई (16.7-22.2 मि.मी.), बीज चौड़ाई (8.3-9.3 मि.मी.) और फली लम्बाई (18.6-26.2 से.मी.)।

रोहिडा के बीज व फली

पूर्ण रूप से पकी हुई फलियाँ से सावधानीपूर्वक बीजों को निकाला तथा क्षैतिज तापमान पर एकठल किया गया। बीज अंकुरण के अध्ययन हेतु 15.25 से.मी. को पांचग्रेज शैल का उपयोग किया गया। बीजों को खाद : बीजों में गुणा 1:1:2 अनुपात सहिष्णु में 1.5 से 2.0 से.मी. की गहराई में उत्पादक बोतल गया निश्चित अंकुरण 3 से 6 दिनों की अवधि में प्राप्त हुआ।

आफ्ती पौधाशाला में चयनित वृक्षों के बीज से तैयार रोहिडा को पीड़े
अंकुरित पौधों की समय-समय पर मनुष्य संस्थाएं, निराल व अन्य उद्यानों में फैलाया गया। परियोजना में स्थापित वृक्षों में प्रति 66 प्रतिशत अंकुरित ज्यादा ग्राहक बना हुआ, जिसमें प्रोजेक्ट 4 (नागर शिलेवाल) तथा प्रोजेक्ट 35 (पाली शिलेवाल) का प्रदर्शन सम्पन्न रहा (87 व 90 उत्तराधिकारित प्रतिशत रेट) या ग्राहकों।

चयन की सी.पी.टी. को ईमेल टेस्टिंग पैटर्न को जोड़ने एवं सरलतम वृक्ष (क्लैसिसैंटी ती) का बनने के लिए प्रोजेक्ट परिचय (प्रतिशत प्रतिशत) है जो कायम रहा।

चयन की सी पी टी को ईमेल टेस्टिंग पैटर्न को जोड़ने एवं सरलतम वृक्ष (क्लैसिसैंटी ती) का बनने के लिए प्रोजेक्ट परिचय (प्रतिशत प्रतिशत) है जो कायम रहा।

प्रारंभिक दो वर्ष में वृद्धि मानकों (growth parameters) के अनुसार जोधपुर प्रायोगिक क्षेत्र के प्रोजेक्ट परिचय (प्रतिशत प्रतिशत) में औसत 87.4 सेमी. लंबाई व 1.01 सेमी. व्यास प्राप्त हुआ है। प्रोजेक्ट सीक्षा के बाद के अनुसार पाली शिलेवाल की सी-सी (128 सेमी.) नागर शिलेवाल की प्रोजेक्ट 35 (1.72 सेमी.) में अंकुरित ज्यादा वृद्धि पाई गई। बायोसयंस में इन सभी प्रोजेक्ट का वृद्धि मानकों का आधार पर विश्लेषण कर सरलतम वृक्ष (क्लैसिसैंटी ती) का बनने का प्रदर्शन किया गया।

जोधपुर में विनाश रोकना का प्रोजेक्ट परिचय प्रायोगिक क्षेत्र

प्रारंभिक दो वर्ष में वृद्धि मानकों (growth parameters) के अनुसार जोधपुर प्रायोगिक क्षेत्र के प्रोजेक्ट परिचय (progeny testing) के अंतर्गत औसत 87.4 सेमी. लंबाई व 1.01 सेमी. व्यास प्राप्त हुआ है। प्रोजेक्ट सीक्षा के बाद के अनुसार पाली शिलेवाल की सी-सी (128 सेमी.) नागर शिलेवाल की प्रोजेक्ट 35 (1.72 सेमी.) में अंकुरित ज्यादा वृद्धि पाई गई। बायोसयंस में इन सभी प्रोजेक्ट का वृद्धि मानकों का आधार पर विश्लेषण कर सरलतम वृक्ष (elite trees) का चयन किया गया।

चयन की सी पी टी को ईमेल टेस्टिंग पैटर्न को जोड़ने एवं सरलतम वृक्ष (क्लैसिसैंटी ती) का बनने के लिए प्रोजेक्ट परिचय (प्रतिशत प्रतिशत) है जो कायम रहा।

सागरी: बीजों का विद्वनन स्तर-स्तर, ए.एन. पोताह, डॉ. एन. को. बोहरा एवं डॉ. डॉ. को. मिथ्या वंदन संबंधित प्रयोग, आचरण, जोधपुर सागरी एक परिपत्री वृक्ष प्रजाति है। इसका वानिकीय नाम टेक्टोना ग्राइंडरिस है। यह क्षेत्र बदनीय का प्रयुक्त सदस्य है।

यह मुख्य उत्पादक न्यून वर्गों में अच्छी वृद्धि करता है।

भारतीय सागरी में उपन जोधपुर के सागरी की अपेक्षा अधिक आनूषणीक विविधता पाई जाती है। सागरी की ओर बढ़कर लगभग 40 मीटर तथा मॉटर 3.5 मीटर तक पायी जाती है। यह ब्रह्मा हिन्दुष बोहरा पाई जाती है। इसी कारण इसे भारत का पीली सागरी भी कहते हैं। संसार में यह दक्षिण दक्षिण, उत्तराखंड, उत्तराखंड, उत्तराखंड एवं युरोप में समूहीकरण के रूप में है। सागरी में पुष्प जन्म-जन्म एवं महाराष्ट्र में प्राप्त होता है। परिपत्र फल पाया और जोधपुर में प्राप्त होता है। सागरी का प्राकृतिक रूप से प्रजनन बीजों के मूल से होता है। कारण आवरण के कारण क्षुद्रबीज 2 या 3 साल के बाद तक अंकुरित होते हैं।

सागरी का टीकों जीवन संरचना समूह में प्राकृतिक रूप से होते हैं। अक्षरों के अंकुरित फैलाव अधिकतम होता है।

सागरी के जीवन है। बीजों के आवरण संरचना एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जायें तो पृथ्वी को दिखाया जाता है। इसलिए प्राकृतिक पवित्रकाल कम होता है।

जोधपुर में बीजों के बाद का प्रक्रिया विविध हो रहा है। अतः: सागरी के बीजों की बुझाई को पहले लिया का काला आवरण कृत्रिम रूप से उत्पादन महत्वपूर्ण होता है। इस विधि के बेडरिंग करते हैं। सागरी में बीजों के आवरण का निर्माण विविधताओं से होता जाता है।

बेडरिंग

(1) प्राकृतिक
(2) समानिक
(3) कृत्रिम

(4) वृक्षों द्वारा (5) ढंग द्वारा (6) अन्य द्वारा H2So, बोहरा बीजों के बाद में संग्रह रहेगा।
प्राकृतिक विविधता -

(i) चीजयाँ द्वारा - चीज के स्रोत के कारण भक्ति पर गिरे जीव पानी के समस्याओं में आने से फूल होते हैं। इन फूलों के पूर्व जीवों पर पारापंथ - ग्यान, यीत, वैज्ञानक, विज्ञानीय जीवन - हिंदु, समाज, नीति आदि जो कि शुरू चलते हैं। प्रभाव बढ़ता है। जब शुरू के बीज चलते हैं तब चीजों का आवरण हट जाता है और नलयों भार हो जाती है जो कि प्रकृतियों में बदल जाती है। चीज नलयों में नींद की पौधा खाल होते हैं। कभी - कभी इस नलयों में बीज खाल मिलते हैं। जो फल हुए गुलाबियों में एक या दो ही संकेत होते हैं। चीज नलय में एक छोटा छोटा जीव नलय होता है कि जो उसके रूप में भर्ती करता है।

(ii) ठीक करार - वह वा दिखाये जीव जब भी ठीक करार के समयों में आता है तो ठीक करार जीव बनाने का काम करता है और उसके बीज के रूप में उपयोग करता है। जो नलयों को उठाते हैं।

(iii) आग द्वारा - जीवों में आग लगने से बीजों का आवरण ठीक हो जाता है। अथवा नलयों द्वारा अद्वैत वातावरण में अद्वैत हो जाता है।

2. रासायनिक विविधता - $H_2SO_4$ का 5 प्रतिशत का घोल बनाकर बीजों को 1 मिनट तक रखना तुच्च पानी में दालने से मूल्यांकन प्रकाशक सक्षम करते हैं। ऐसा तरीका दालना है। जब तक खोल पूरा तम्बू से हट न जाये तद्दोपरांत इन बीजों को बोने में उपयोग किया जाता है।

बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है।

बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है। बीज एक ही नतीजा का कारण बनाता है।

1. छिटकर - 10×10 मी ज़मीन का चिट्ठी स्तर में चिट्ठी करने का कारण बनाता है।

2. पेट्रिट - इस विविधता में पेट्रिट में पीड़ा की दूरी 10 सेमी तथा चीज से बीज की दूरी 5 सेमी रखा जाता है। बीज 1.5 सेमी जमीन में बुखार की जाता है।

3. छोटे - छोटे गाछ बनाकर - 2 सेमी तक को गाढ़े गाढ़े बनाकर
पीठ संग्रह:- फल्ट्ड प्रजाति - पीठ लेप्टोस्फोरलिना

भीव लगभग 1.5 सेमी जीवनी में डालकर भी बुखार की जाती है जब नवालंधित 3 से 5 सेमी को ठीक ठीक तब इन्हें दुनाल्यालकर कर दें।

रोगण विधि- सामान्यतः जिन क्षेत्रों में रोगण को खत्म करने दिखाइयाः की व्यक्ति अच्छी है वहाँ तो तत्वधारण करें। तथा जोड़ों सिंचाई की स्थान पर उन्हें ठीक से ठग्न नहीं होता। तो वहाँ रुद्र-रुद्र लगाना चाहिए।

1. पीठावलों के चीजों का रोगण - पोशीवाया या रुट टंडनेर में लगे पीठ लगभग 3 माह में 40 से 45 सेमी की ऊंचाई के हो जाते हैं तथा वह पीठ योग्य हो जाते हैं। इन्हें ही रोगण करा जाना चाहिए। शारीरिक को परीक्षण में 45 सेमी से कम ऊंचाई वाले पीठ लगाने पर उत्तर जीविका चक्र रिकाइट की गई है।

2. रुद्र-रुद्र बनाना तथा रोगण करना - सागर को परीक्षण में 9 माह से 1 वर्ष आयु के पीठों का रुद्र-रुद्र बनाना सकते हैं। इस कारण हेतु पीठों को जंगल सिरह जाने में तथा काल शरृंग से पीठों को ठेंग कार्य चाहूँ। या यहाँ से काटकर अलग कर लेने हैं।

3. पीठारोपण स्थल - इस जाग को जंगल-पर्वतारों में अवशिष्ठ झाड़ों या अवश्य बस्तियों से रहते करके छोटे क्षेत्रों में 2×2 मी. तथा अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में 3×3 मी. के अंतराल पर 45×45×45 सेमी को गड्ढे बनाने पर पराशु गड़ड़े से निकाली मिट्टी मिट्टी गड्ढों के साथ ही बंटने कुटूं में अनिष्ट सपना तक पहुँच रहे हैं। यह भी तीखिया भी ढाटियां अथवा ठठों में अर्थात् एवं पीठ करेंगे। ( तालाब ) अर्थात् निष्ठा करते हैं। तथा जमीन को अन्तर बचाव संभाल भी अच्छी तरह से हो जाता है।

4. रोगण को परीक्षण के सावधानियाँ एवं रीख रखाख - अनुमतियाँ:-

1. बुखार पीठरोग के साथ नहीं हो जाना है। पीठों की जड़ में जंगल दबाव जाना है।

2. बुखार पीठरोग की भूमिका में लगभग 1 मी गहराई तक रूप

3. नीचे आयु में पीठ के बुखार के आगे से चलने हेतु बुखार पीठ स्थल पर दुर्घटना चाहिए।

नसरी में सागर का पीठ
मिला डेना चाहिए। दिव्यीया कृपया की इल्ली सागरी की पतिओं को खा जाती है। उसका प्रकार जून से अभाव माल मकर होता है। जून तलायोग निकलेंगे की इल्ली पतिओं को खाकर कृषक का रूप में बदल देंगे हैं। नसीर मे कॉटननकाश दवाइयों जैसे मोनोक्लोरोफोम या नुआक्लोर का 0.5 प्रतिशत का घोल का छिपाकर करना चाहिए साथ ही वृक्षारोपण करने समय यह यदि रखे कि सागृही का साथ अन्य प्रतिकृति का वृक्ष भी बीच-बीच में लगाये विसरके कि कीटों का प्रकृति कर कह दी जा सकता है।

विविध गतिविधियां
सामाजिक वातांकी बुरुण पुंगे, महाराष्ट्र के क्षेत्रीय
वन अधिकारियों का भ्रमण
दिनांक: 19.10.2015
जल की कमी वाले हेडार्श में वृक्षारोपण एवं पीपलधारा तकनीक के लिए अयोग्य प्रमाण पर अने सामाजिक वातांकी बुरुण पुंगे, महाराष्ट्र के क्षेत्रीय वन अधिकारियों भी एल.ए.एन.रा ने दिनांक 19.10.2015 को शुक्र वन अनुसंधान संस्थान, जोगपुर का भ्रमण किया। बुरुण वातांकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभावी श्री उमारें चौधरी, भावना से. ने इस प्रशासन के द्वारा संस्थान में संचालित निदेश प्रतिविधि एवं विकास तकनीकों की जानकारी दी।

इन अधिकारियों ने संबंधित प्रयोगशालाओं की भी अवलोकन किया। टो. जी.सिंह ने इन अधिकारियों से उनके क्षेत्र में निपटने वाली वृक्ष प्रजातियों, जल संरक्षण तकनीकों, रिंग पिट जैसे वृक्षारोपण तकनीकों का अपने के विचार-विचार संबंधित किया। श्री एन. बानो ने जल विवरण पूर्वक के पुनर्वापन हेतु उपलब्ध प्रजातियों, पौधों में रिंग पिट एवं इसकी बायोव्यवस्था के बारे में जानकारी दी।

तत्परतानुसार इन अधिकारियों ने संबंधित के विस्तार एवं निर्विवेचन को एवं प्रशासनिक पीढ़ीशाला का भ्रमण किया।

महानिदेशक, भारतीय वातांकी अनुसंधान एवं रिसर्च परिषद, देहरादून का शुक्र वन अनुसंधान संस्थान का दौरे महानिदेशक, भारतीय वातांकी अनुसंधान एवं रिसर्च परिषद, दो. अध्यक्षी कुमार, भावना से. ने दिनांक 26 जून से 28 अगस्त 2015 को संबंधित का दौरे किया। संस्थान निदेशक, भावना से.
यथा वैज्ञानिक डा. जी. सिंह ने विद्याधिकारियों को विभिन्न प्रक्रियाओं को चुनने की कार्यक्रम ज्ञान प्राप्त कराने, जन प्रबंधन एवं पौधारोपण में विभिन्न की मापन एवं वारामः (Quantity & frequency of watering) कार्यक्रम प्रयोजन (Carbon Sequestration) इंतजार की सारांशी से तकनीकी जानकारी दी। विद्याधिकारियों के बीज जातियाँ (Genotype), जीन एक्सप्रेशन (Gene expresion) इंतजार की वैज्ञानिक जानकारी के विद्याधिकारियों को उपलब्ध करायी। वैज्ञानिकों ने विद्याधिकारियों की विज्ञानीय जानकारी का प्रशिक्षण अनुसार विभिन्न साधन से समाधान किया।

संस्थान के वैज्ञानिक एवं जन संपर्क अधिकारी डा. भ.को. बाहुरा ने उत्तम पौधवात बाले पीपल तैयार करने एवं उनकी उज्जवलता के बारे में बताया।

विद्याधिकारियों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर शोध गतिविधियों का अनुसरण किया। प्रयोगशाला भ्रमण के दौरान वन आयुर्विज्ञानीय एवं वृक्ष प्राणि प्रभाव को वैज्ञानिक डा. तथ्यात्मक से जोनेटिक मोल्पर्फ और मार्क्स से संबंधित जानकारी प्रदान की। एकाधिक जनोपद प्रभाव को वैदिक वैज्ञानिक डा. रंजता आयां ने फ्यूचरी भूमि में वृक्षारोपण, एकाधिक जनोपद से संबंधित अनुसंधान इंतजार की जानकारी उज्जवल करायी।

जीवन विद्याधिकारियों के हेतु समूह ने संस्थान के निवासियों का विभिन्न कार्यक्रमों का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित शोध गतिविधियों, बिकसित तकनीकों से संबंधित सूचनाओं का अनुसरण किया। भ्रमण के दौरान बीज उद्यान मोहरे, अनु-सहायक-प्रबंध एवं बी.जे.दार्जार ने स्वीकार किया।
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चैनपुरा, जौधपुर में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में आयात की भागीदारी मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत विकास की "राजस्थान राजवर्धक हिता माध्यमिक विद्या अभियान परियोजना" के सहयोग (Collaboration) से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चैनपुरा जौधपुर में दिनांक 19 नवम्बर 2015 को कहाना 9 से 12 के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक संवेदन विकसित करने के लिये (For grooming scientific thinking in 9th to 12th class students) एक दिवसीय जिला तरीर विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें 53 विद्यालयों के 182 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी में शुभ क वन अनुसंधान संस्थान, जौधपुर की ओर से श्री ज्ञानानंद चौधरी, भारतवर्ष, कृष्णा वनिकी एवं वितरित ग्रामीण भारत एवं डॉ. वितान सिंह, वैज्ञानिक- बी ने भाग लिया।

प्रदर्शनी में संस्थान (आपकी) की महत्वपूर्ण पौधालाल द्वारा तैयार किये गए खेड़ी, सोहिया, जाल, शृंखला, सूरत, अमलास, निश्चित सोहिया के प्रदर्शन भी दिखाई गए।

श्री चौधरी ने इस अवसर पर मूढ्य की महत्वाकांक्षी एवं पहलवाण संरक्षण हेतु जगहबाजता लताने संवेदन भी दिया। डॉ. वितान सिंह ने भी अपने संबोधन में विद्यार्थियों को बताया कि विज्ञान एक सत्ता प्रतिष्ठा है इसमें परिक्रमण (Refinement) जारी रहना चाहिए।

7/12/2015 को शुभ क वन अनुसंधान संस्थान, जौधपुर का भव्यतम किया। दल ने कृष्णा वनिकी एवं वितरित प्रगति के प्रबल महत्व के अभियान के प्रभाव में श्री ज्ञानानंद चौधरी, भारतवर्ष, कृष्णा वनिकी एवं वितरित ग्रामीण भारत एवं डॉ. वितान सिंह, वैज्ञानिक-बी ने भाग लिया।

कृष्णा वनिकी एवं वितरित ग्रामीण भारत (CASFOS), बर्मीहाट, असम के प्रशिक्षक अधिकारियों (FO) के 2015-16 को भव्यतम किया।

दिनांक 10/12/2015 कृष्णा वनिकी एवं वितरित ग्रामीण भारत (CASFOS), बर्मीहाट, असम के प्रशिक्षक अधिकारियों (FO) के 2015-16 को भव्यतम किया।
कॉलेज ऑफ़ फोरेस्ट्री (College of Forestry) कॉलेज एंथ्रोलॉजी और बायोटेक्नोलॉजी (Kerala Agricultural University) इन्स्टीट्यूट के और, न्यूज़ीलैंड भ्रमण
कॉलेज ऑफ़ फोरेस्ट्री (College of Forestry) कॉलेज एंथ्रोलॉजी और बायोटेक्नोलॉजी (Kerala Agricultural University) इन्स्टीट्यूट के और, न्यूज़ीलैंड भ्रमण
eवं पहाड़ी क्षेत्रों के लिए समस्याही खाई, एवं ग्राज़ॉनी (Gradonie) जैसी तकनीकी को जानकारी दी।
इसके बाद विद्यार्थियों को इस दल ने संस्थान की सिद्धांत प्रयोगशालाओं एवं विस्तार एवं विभाजन उपकरण का भ्रमण कर शोध गतिविधियों का अवलोकन किया।
दल ने परिसंह नगर बुगलान के जातक संरचना (Tissue culture) तकनीकी से संबंधित पौधों के पौधारूपण का भी अवलोकन किया।

सेटुल एक्सिज़ी सैनिक सेंटर सैकड़ारी बुढ़लू, जोधपुर कैंट के विद्यार्थियों का आयोजन में शैक्षणिक भ्रमण
सेटुल एक्सिज़ी सैनिक सेंटर सैकड़ारी बुढ़लू, जोधपुर कैंट के कक्षा IX के कुल 354 विद्यार्थियों ने दिनांक 21 दिसम्बर, 2015 एवं 22 दिसम्बर, 2015 को शौक का अनुसार संस्थान, जोधपुर के शैक्षणिक भ्रमण का वास्तविक ज्ञान कार्यों का जानकारी प्राप्त की।
दल को पौधे उगाने में विभिन्न शैक्षणिक विभाजनों को नव आर्थिक, और वस्तुप्रमाणी, अकादमिक भागों, वायु भ्रमण तथा वायु भ्रमण भ्रमण की स्वीकृति में इसकी उत्कृष्ट संस्थान तकनीक का उल्लेख किया।
संस्थान के जनसंख्या अंशिकाओं एवं वैज्ञानिकों एवं न्यूज़ीलैंड के बुझ संरचना की, वैश्विक, महाशक्ति क्षेत्रों में आवश्यकता व्यतिरिक्त, दौड़ी (Trench & Mound) (Ring Pit) । खाई एवं डोली (Trench & Mound)

जिला-मंडसीर (मध्य प्रदेश) के विभागों के आधार पर भ्रमण सब मिशन ऑफ एशियाकलर एक्सपर्टीशन (크리षि विस्तार सुधार कार्यक्रम "आयाम"") के अन्तर्गत राज्य के बाहर कृषि भ्रमण कार्यक्रम के तहत जिला-मंडसीर (मध्य प्रदेश) से आये कृषकों को दल ने नॉडल अधिकारी श्री शिव कुमार शर्मा, युवञ्चलमंडल बाहरा एवं कान्धा ललान प्रजामुख ने साथ दिनांक 30 दिसम्बर, 2015 को रूपक बन अनूपांधान संबंधी (आपातक), जोधपुर का भ्रमण किया। इस दल में विकास खचन मंडसीर, मल्हारगढ़, कैलायाक, भागवतपुर एवं गांगड़े के 35 कृषक सम्मिलित थे।

कृषि विभागों के विस्तार प्रभाग के प्रभारी जीत कुमार जी उमाराम चौधरी, भवत,संद, ने दल का संबंध में ख्याति करते हुए संबंधी की विभाग प्रस्तुत ग्रामीणों के विस्तार एवं निवेश के बारे में नवव तकनीकी पीढ़ीता का भ्रमण कराते हुए विभिन्न गतिविधियों का अंकलोकन कराया। प्रयोगात्मक भ्रमण के दौरान विभिन्न कृषकों को उनके संबंध में भारतीय, पुरुष एवं लड़की की गुणवत्ता, अकादम वरदात, मुल्य संबंध, भारतीय प्रवाह, लग्नी भूमि का पुनर्भार, कृषि संस्कृति एवं शायद गतिविधियों एवं तकनीकों की जानकारी दी गयी। कृषकों ने परिसर में शिक्षा करके संबंधों से विकासित गुरु बनकर बुधारोपण का भी अंकलोकन किया।

व्यवस्थापन
श्री जेंदु सिंह गांगलिया, सहायक का दिनांक 29.12.2015 का निधन हुआ। उनके असाधारण निधन पर आपातक बारे में नया अंशावली शीर्षक लिखा।

आपातक दर्जन में प्रकाशित लेखों में सम्पादक पण्डित का वैचारिक सामय आवश्यक नहीं है। प्रकाशित समाप्ती एवं छविचित्र सामाजिक एवं संध्य सहित अन्य उद्योग किए जा सकते हैं।
छव्या फिन्च आवरण पुढ़ : रोहिण्डा वृक्ष छाया चित्र पुष्च पुढ़ : नरसिंह में रोहिण्डा के पीछे
पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामग्री, सुझाव एवं जानकारी कृपया निम्न पते पर भेजें-
उमाराम चौधरी, भा.व.से. (संपादक, आफ्री दर्पण)
प्रभागाध्यक्ष, कृषि वाणिज्य एवं विस्तार प्रभाग
शृंखल वन अनुसंधान संस्थान (आफ्री)
न्यू पाली रोड, जोधपुर - 342005
दूरभाष : 0291-2729198 फैक्स : 0291-2722764 ईमेल : umaram@icfre.org